श्राप

उत्पत्ति 3:1-24

आदम ने अपनी पत्नी का सहचर्य और परमेश्वर की संगति का आनंद उठाया। उसका कार्य सम्पूर्ण हो रहा था। उसका पूरा जीवन आशीष और आनंद से भरा हुआ था। परन्तु जल्द ही आदम इस अलग दुनिया में अपना जीवन बनाने के लिए संघर्ष करने लगा। पुरुष और स्त्री उस जगह के बाहर थे, जिस जगह में परमेश्वर ने उन्हें आशीषित किया था - जहाँ की कोई वापसी नहीं थी। उन्होंने पीढ़ा, भय और अपराध बोध का अनुभव किया, और वे दुबारा कभी परमेश्वर को नहीं देख पाये। कुछ बहुत गलत हो गया था। उत्पत्ति 3 हमें इसकी कहानी बताती है।

बाइबल हमें बुराई की उत्पत्ति का पूरा विवरण नहीं देती है, परन्तु यह संकेत देती है कि शैतान एक दूत था जो गर्व से भर गया और परमेश्वर के स्थान को हड़पने की कोशिश की (यशायाह 14:12-14)।

शैतान के विद्रोह के कारण उसे परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर कर दिया गया और पृथ्वी पर उतार दिया गया। अतः शुरुआत से ही मानवजाति की कहानी में शत्रु परमेश्वर के कार्यों को नष्ट करने पर तुला हुआ था।
इस शत्रु को शैतान, दानव, या "झूठ का पिता" के रूप में सबसे अधिक जाना जाता है *(यूहन्ना 8:44)*, उसने अपने विद्रोह में मानव जाति को सम्मिलित करने का प्रयास किया और उसका पहला उद्देश्य पुरुष और स्त्री को बुराई के अनुभव का परिचय कराना था।

हमारे प्रतिद्वंदी के खेल को समझना

एक अच्छा प्रशिक्षक अपने प्रतिद्वंद्वी के खेल को ध्यान से समझता है, ताकि वह एक प्रभावी रक्षा की योजना बना सके । शैतान ने बगीचे में अपनी सर्वश्रेष्ठ नीति का उपयोग किया, और एक बार जब आप इन षड़यंत्र को समझने लग जाएंगे तो आप उनके खिलाफ बचाव करने में सक्ष्म हों जाएंगे।

पहली चाल: भ्रम

शैतान की पहली चाल प्रश्न पैदा करना था: *“क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, ‘तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना’?” (उत्पत्ति 3:1)*। परमेश्वर ने एक सरल निर्देश दिया था, और शैतान की पहली चाल उस पर सवाल उठाना था। परमेश्वर के कथन पर सवाल उठा कर, शैतान ने पुरुष और स्त्री के लिए प्रभु के आदेश की अवहेलना करना आसान कर दी।

जब भी शैतान आपको पाप करने के लिए लुभाता है, तो उसकी पहली रणनीति आपके भीतर भ्रम पैदा करने की होती है। वह यह सुझाव देकर आपके बचाओ को कम करने की कोशिश करता है कि शायद आप जो पाप करना चाहते हैं वह वास्तव में परमेश्वर द्वारा निषिद्ध नहीं है, या फिर कम से कम यह कि बाइबल में इस बारे में स्पष्ट रूप से लिखित नहीं है।

दूसरी चाल: अनुमान

परमेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया था कि ***पाप का परिणाम मृत्यु होगी (2:17),*** परन्तु शैतान स्त्री को सुझाव देता है कि पाप के परिणामों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है: ***“तुम निश्चय न मरोगे !”(3:4)।***

यह देखना मुश्किल नहीं है कि यह रणनीति कहाँ जा रही है। वह चाहता है कि स्त्री परमेश्वर की कृपा को मान ले। "आखिरकार, परमेश्वर तुमसे प्रेम करता है," वह कह रहा है, "तो वह तुम्हारे साथ कुछ भी बुरा कैसे होने दे सकता है?" जब शैतान आपको पाप करने के लिए लुभाता है, तो वह आपको ऐसे सुझाव देकर आपकी सुरक्षा कम कर देता है कि आप ऐसा कर सकते हैं और आप इस पाप से बच सकते है और इसका आपको कोई दुष्परिणाम नहीं भुगतना पड़ेगा।

तीसरी चाल: महत्वाकांक्षा

आदम और हव्वा परमेश्वर की छवि में बनाए गए थे, परन्तु शैतान उनको सुझाव देता है कि वे अब और बेहतर हो सकते हैं: *"तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।”(3:5)।*

यह दुश्मन की सबसे चालाक रणनीतियों में से एक है। उसे यह सुझाव देना बहुत पसंद है कि हमें परमेश्वर का स्थान लेना चाहिए, इसलिए नहीं कि वह हमारे बारे में बहुत अच्छा सोचता है, बल्कि इसलिए की वह परमेश्वर से बहुत गहरी घृणा करता है। वह हमारे अहंकार को आमंत्रण देता है जब वह हमे यह सुझाव देता है कि कुछ भी अच्छा या बुरा जानने के लिए हमे परमेश्वर

की आवश्यकता नहीं है। उसका संदेश आज भी वही ही है: "आप अपने खुद के भगवान हो सकतें हैं। आप खुद ही तय कर सकते हैं कि आपके लिए क्या सही है!"

बुराई का ज्ञान

परमेश्वर का पहला नियम, उनकी सभी आज्ञाओं की तरह, उनके प्रेम की एक अद्‌भुत अभिव्यक्ति है: *"और यहोवा परमेश्वर ने आदम* को यह आज्ञा दी, "तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना" (2:16-17)*।

परमेश्वर ने हर चीज भली बनाई, और जब उन्होने आदम से कहा कि वह इस पेड़ से न खाएं तो यह उसकी सुरक्षा के लिए ही था: "आदम, तुम पहले से ही भलाई के बारे में जानते हो, परन्तु तुमको यह भी समझने की आवश्यकता है कि इस ब्रह्मांड में एक और वास्तविकता है जिसे बुराई कहा जाता है। मैं नहीं चाहता कि तुम कभी भी इसका अनुभव करो, इसलिए इस पेड़ से मत खाना!" परन्तु आदम और हव्वा को लगा की उन्हे बुराई का ज्ञान भी होना चाहिए, और तभी से हम सभी इस बुराई के ज्ञान साथ जी रहे हैं।

स्वर्ग से निष्कासन

परमेश्वर की उपस्थिति में बुराई का कोई स्थान नहीं है, *इसलिये यहोवा परमेश्वर ने* आदम और हव्वा को *अदन की वाटिका में से निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को नियुक्त कर दिया।* (3:23-24)।

आदम और हव्वा परमेश्वर के आशीषित स्थान के बाहर थे। उनका उत्तम विवाह तनावपूर्ण हो गया, और उनका कार्य निराशाजनक हो गया। उन्होने दर्द, भय और खोने का अनुभव किया। और मृत्यु एक भयानक वास्तविकता थी जिसे वह कभी न टाल सकें। सबसे बुरा यह हुआ कि वे परमेश्वर से विमुख होकर इस पृथ्वी पर अकेले हो गए। स्वर्ग उनसे छूट गया और वापसी का कोई रास्ता नहीं था।

परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को बाहर निकालने के बाद, *"जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की वाटिका के पूर्व की ओर करूबों को, और चारों ओर घूमनेवाली ज्वालामय तलवार*

को भी नियुक्त कर दिया" (3:24)। आगे-पीछे *घूमनेवाली ज्वालामय तलवार* परमेश्वर के न्याय को बताती है। इसके आस-पास रहना असंभव था। यह दृश्य आदम के लिए भयानक रहा होगा।

बाइबिल के अनुसार मानव स्थिति का मूल्यांकन यह है कि: हमे बुराई का ज्ञान है, और हमे परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर कर दिया गया हैं। और हम बुराई के इस ज्ञान से कभी मुक्त नहीं हो सकते, और हम परमेश्वर के स्वर्ग में कभी वापस नहीं जा सकते है। यह मूल्यांकन है, तो इलाज क्या है?

आशा जो अभिशाप के साथ शुरू हुई

आशा कि शुरुआत उस दिन हुई जिस दिन हव्वा और आदम ने पाप किया, और यह एक अभिशाप के साथ शुरू हुई! तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, *"तू श्रापित है" (3:14)*।

यह अभिशाप एक "देवता का कथन है, जो किसी व्यक्ति या चीज के विनाश के लिए भेजी गयी है। [1]इसलिए जब परमेश्वर ने सर्प को श्राप दिया, तो वह घोषणा कर रहें थे कि बुराई कभी खड़ी नहीं रह सकती। शैतान के पास अंतिम शब्द नहीं होगा। आदम और हव्वा इस खबर को सुनकर उल्लासित हो गए होंगे ।

हम परमेश्वर का बुराई को अभिशाप देने के लिए धन्यवाद दे सकते हैं। इस अभिशाप के बिना, हम बुराई के ज्ञान के साथ हमेशा के लिए अटक सकते थे। परन्तु इस श्राप ने हमारे लिए आशा के द्वार को खोल दिया। यदि परमेश्वर बुराई का विनाश न करते, तो कौन कर सकता था? आज तक के मानव इतिहास में हमने कोशिश की है और असफल रहे। हमारे समाचारों में हिंसा और दुर्व्यवहार का ही बोलबाला बना हुआ है। हमे इससे छुटकारा नहीं मिल सकता। परन्तु परमेश्वर ने शैतान से कहा, "तू *श्रापित* है"। और उसी घड़ी से ही, हमारे शत्रु को अन्तिम विनाश के लिए भेज दिया गया।

उसके पश्चात परमेश्वर ने दूसरे श्राप कि घोषणा की। पुरुष की ओर मुड़ते हुए, उन्होने कहा, "श्रापित..." आदम ने भय के कारण अपनी सांस को ही रोक लिया होगा। परमेश्वर ने सर्प को श्राप दिया था, और अब इस खौफनाक शब्द को बोलते वक़्त वे सीधे आदम को देख रहे थे। आदम ने सोचा होगा कि वह पूरी तरह से नष्ट होने जा रहा है, परन्तु वह बिलकुल आश्चर्यचकित रह गया। बजाए इसके की परमेश्वर उसको ये बोलें की आदम, "तुम श्रापित हो," उन्होने ने कहा, "भूमि तेरे कारण शापित है" (3:17)।

यहाँ हम परमेश्वर के बारे में एक सबसे महत्वपूर्ण चीज की खोज करेंगे जिसे हमे जानने की आवश्यकता है। उन्होने घोषणा करी कि वह बुराई को नष्ट कर देंगे, परन्तु साथ ही वह श्राप को फेर देते है ताकि श्राप धरती पर पड़े और सीधे पुरुष या स्त्री पर न पड़े, ताकि उनके और परमेश्वर के बीच सामंजस्य बैठाने के लिए जगह बन सके।

परमेश्वर न्यायप्रिय है, और श्राप को कहीं और जाना चाहिए। इसलिए सही समय पर, परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा और उन पर हमारे सभी पापों के श्राप को लाद दिया। और यही सब कुछ है क्रूस के बारे में। मसीह खुद श्रापित हो गए हमे इस श्राप के व्यवस्थान से छुड़ाने के लिए।

एक दिन मसीह की जीत का प्रभाव पूरे ग्रह को बदल देगा। श्राप को धरती कि ओर रुख कर के, परमेश्वर ने सृष्टि को हताशा का शिकार बनाया, परन्तु साथ ही उन्होने यह भी वादा किया कि "सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी" (रोमियो 8:21)।

चली आरही लड़ाई

और तब परमेश्वर ने सर्प से कहा, "और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा" (उत्पत्ति 3:15)।

कुल मिला के, “दुश्मनी” बुराई के विरुध एक कठोर युद्ध है, जो की मानव जाति के इतिहास मे पीड़ियों से चला आ रहा है। हम हमेशा बुराई से छुटकारा पाने का प्रयास करतें हैं, परन्तु हमे सिवाए हताशा, दर्द, बीमारी, और मृत्यु के कुछ हासिल नहीं होता। हम बुराई के ज्ञान में अटके हुए हैं। परन्तु परमेश्वर वादा करतें हैं कि एक उद्धारक आएगा और बुराई के खिलाफ एक महान संघर्ष में शामिल होगा। वह एक घातक प्रहार कर के दुश्मन के सिर को कुचल देगा, और इस प्रक्रिया में, दुश्मन उसकी एड़ी को काट देगा जिसने उसे कुचल दिया था।

कल्पना कीजिये की आप एक विषैले सांप के सिर पर खड़े हैं। वह आपको काटता है और एक घाव देता है, परन्तु फिर आपका घायल पैर सांप को जोर से नीचे दबाता है और उसका विनाश कर देता है। इसी प्रकार से, अपनी मृत्यु के माध्यम से, मसीह ने दुश्मन पर एक घातक घाव किया और पुरुष और स्त्री के लिए उसकी ताकत से बाहर आने का रास्ता खोला (कुलुस्सियों 2:15 देखें)।

मसीह स्वर्ग से आयें, न सिर्फ बुराई की शक्ति पर काबू पाने के लिए, बल्कि हमारे लिए स्वर्ग में वापसी का रास्ता भी खोलने के लिए। कल्पना करने की कोशिश करें की आप परमेश्वर के स्वर्ग के बाहर खड़े हैं, करूबों और न्याय की ज्वलंत तलवार को वापस देख रहे हैं। जैसे आप देख रहे हैं, कोई परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर आता है और आपके साथ खड़ा हो जाता है। फिर वह पलट कर ज्वलंत तलवार की ओर बढ़ता है। ओर जैसे ही आप देखते है आप उन्हे झुक कर प्रणाम करते हैं। ज्वलंत तलवार आगे-पीछे चमकती है, और आप देख सकते हैं कि जब वे वहां जाएंगे तो उनका क्या हो सकता है। परन्तु वह लगातार अथक रूप से आगे बढ़ते रहतें हैं । तलवार उन पर हमला कर उन्हे मार देती है। इससे उनका शरीर टूट जाता है, परन्तु उनके शरीर को तोड़ने में तलवार स्वयं टूट जाती है और भूमि पर बिखर जाती है। उनकी मृत्यु के द्वारा, परमेश्वर की उपस्थिति और आशीष का रास्ता आपके लिए वापस से खुल गया है।

प्रकाशित

हम केवल तभी अपनी दुनिया का एहसास करना शुरू कर सकेंगे जब हम ये समझ जाएँ कि हम इस दुनिया में बुराई के ज्ञान के साथ रहते हैं और हमे परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर किया गया है। परन्तु परमेश्वर ने हमें त्यागा नहीं है। बुराई के साथ चल रही हमारी इस लड़ाई में उसने अपने पुत्र को भेजा। क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से, उन्होने शत्रु की शक्ति को तोड़ दिया और परमेश्वर की उपस्थिति और आशीष में एक नया और जीवित रास्ता खोल दिया।

नोट्स:

1. Concise Oxford Dictionary, 6th ed.

प्रश्न

परमेश्वर के वचन के साथ और अधिक जुड़नें के लिए इन प्रश्नों का प्रयोग करें। किसी अन्य व्यक्ति के साथ इन प्रश्नों पर विचार विमर्श करें या इन प्रश्नों को आत्म विश्लेषण के लिए प्रयोग करें ।

1. **यदि परमेश्वर द्वारा बनाई गई हर चीज अच्छी थी, तो बाइबल की क्या व्याख्या है कि, आज की दुनिया जैसी है वैसी क्यों है?**

2. आपने अपने जीवन में कार्य करते वक्त शैतान की रणनीतियों (भ्रम, अनुमान या महत्वाकांक्षा) में से एक को कहा देखा है?

3. किसी एक श्राप के बारे में विचार करे जो परमेश्वर ने उस दिन सुनाया था जिस दिन आदम और हव्वा ने पाप किया था। यह आपको परमेश्वर के बारे में क्या बताता है?

4. आप अपने आस-पास बुराई के खिलाफ जूझ रहे लोगों को कैसे देखते हैं? आप इस बारे में क्या मानते हैं कि एक व्यक्ति बुराई के खिलाफ कैसे लड़ सकता है?

5. परमेश्वर ने हमे उसकी उपस्थिति और आशीष में वापस आने का रास्ता खोलने के लिए क्या किया है?